अमीरे अहले सुन्नत की किताब "नेकी की दा'वत" से लिये गए मवाद की चौथी क़िस्त

Achchhi Buri Sohbat (Hindi)

कुल सफ़हात 17

# अच्छी बुरी सोहबत

- दिल और नाक के मरज़ से नजात 03
- शैतानी वस्वसे से हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा 06
- अ़ज्वा खजूर की गुठली से दिल का इलाज 04
- अनोखी गाय 13
- ग़ार का आ़बिद 17



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

**मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी**

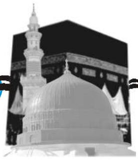

## किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

## अच्छी बुरी सोह़बत

येह रिसाला ( **अच्छी बुरी सोह़बत** )

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा : मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिदके सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़ह़ा 99 ता 116 से लिया गया है।

# अच्छी बुरी सोह़बत

**दुआए अ़त्तार**

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "**अच्छी बुरी सोह़बत**" पढ़ या सुन ले उस को अपने पसन्दीदा बन्दों की सोह़बत नसीब फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़फ़िरत कर। اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लिशान है **:** बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे।

(ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث ٤٨٤)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

**सोह़बत के फ़ौरी असरात की मिसालें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर सोह़बत अपना असर ज़रूर रखती है, मसलन अगर आप की मुलाक़ात किसी ऐसे इस्लामी भाई से हो, जिस की आंखों में अपने किसी अ़ज़ीज़ की मौत की वजह से **नमी** हो, चेहरे पर **आसारे ग़म** ख़ूब नुमायां हों और लहजे से **उदासी** झलक रही हो तो उस की येह ह़ालत देख कर कुछ देर के लिये आप भी **ग़मगीन** हो जाएंगे। और अगर आप को किसी ऐसे इस्लामी भाई के पास बैठने का इत्तिफ़ाक़ हो जिस का चेहरा किसी काम्याबी की वजह से **ख़ुशी** से दमक रहा हो, लबों पर **मुस्कराहट** खेल रही हो और उस की बातों से **मसर्रत** का इज़्हार हो रहा हो तो ख़्वाही न ख़्वाही आप भी कुछ देर के लिये उस की **ख़ुशी** में शरीक हो जाएंगे।

**अच्छी बुरी सोह़बत के असरात : इसी** त़रह़ अगर कोई शख़्स ऐसे लोगों की सोह़बत इख़्तियार करेगा जो फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर **ग़ाफ़िल** हों और गुनाहों के इरतिकाब में किसी क़िस्म की **झिजक** मह़सूस न करते हों तो ग़ालिब गुमान है कि वोह भी बहुत जल्द

उन्ही की **मानिन्द** हो जाएगा और अगर कोई आदमी आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार करे जिन के दिल **फ़िक्रे मदीना** से मा'मूर हों, वोह दिन रात आख़िरत की फ़लाह़ (या'नी काम्याबी) के लिये अपनी **इस्लाह़** की कोशिश में मसरूफ़ रहते हों, उन की आंखें **अल्लाह** तआ़ला के **ख़ौफ़** से रोती हों, तो बहुत उम्मीद है कि येही कैफ़िय्यात उस शख़्स के दिल में भी सरायत (या'नी असर) कर जाएं । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

*बुरी सोह़बतों से बचा या इलाही बना मुझ को अच्छा बना या इलाही*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمّد

**दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अच्छी अच्छी मदनी सोह़बत पाने के लिये आप को परेशान होने की क़त़अ़न ज़रूरत नहीं, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, इस की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे । हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करे और सुन्नतों की तरबिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र करे । इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल आ़क़िबत की बेहतरी के लिये बेचैन हो जाएगा, जिस के नतीजे में गुनाहों की कसरत पर नदामत होगी और तौबा की सआ़दत मिलेगी । आ़शिक़ाने रसूल के हमराह मदनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह लब पर दुरूदे पाक का विर्द होगा और ज़बान तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो ना'त की आ़दी बन जाएगी, ग़ुस्से की जगह नरमी, बे सब्री की जगह सब्रो तह़म्मुल, **तकब्बुर** की जगह आ़जिज़ी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा । दुन्यावी माल व दौलत के लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ । **इस्लामी बहनों** को भी चाहिये कि अपने शहर में होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करें ।

**दिल और नाक के मरज़ से नजात :** **आप** की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से मम्लू एक **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **मुरादआबाद** (यूपी, हिन्द) के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल मैं गुनाहों के समुन्दर में ग़रक़ था। नमाज़ों से दूरी, फ़ेशन परस्ती और बे ह़याई की नुहूसतों में जकड़ा हुवा होने के सबब मेरी ज़िन्दगी के अय्याम जो कि यक़ीनन अनमोल हीरे हैं ग़फ़्लत की नज़्र थे। रूह़ानी अमराज़ के इ़लावा मैं जिस्मानी अमराज़ में भी गरिफ़्तार था, चुनान्चे मुझे **नाक की हड्डी** बढ़ जाने के साथ साथ **दिल की बीमारी** भी थी, जिस की वजह से मैं काफ़ी अज़िय्यत का शिकार रहता था। बिल आख़िर इस्यां की तारीक रात के सियाह बादल छटे। हुवा यूं कि मुझे दा'वते इस्लामी के तह़त सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र करने वाले **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत नसीब हुई, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बदौलत मेरी ज़िन्दगी के अन्दर मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं ने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के अपने आप को सुन्नतों के रास्ते पर डाल दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह बरकत भी नसीब हुई कि **मदनी क़ाफ़िले से वापसी पर मेरी नाक की बढ़ी हुई हड्डी दुरुस्त हो चुकी थी और कुछ दिनों के बा'द मेरा दिल का मरज़ भी ख़त्म हो गया।**

*दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो पाओगे फ़रह़तें क़ाफ़िले में चलो*
*है शिफ़ा ही शिफ़ा, मरह़बा ! मरह़बा ! आ के ख़ुद देख लें, क़ाफ़िले में चलो*

(वसाइले बख़्शिश, स. 612)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने मुआ़शरे के एक बिगड़े हुए फ़र्द को जब **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत और इस दौरान आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मुयस्सर आई तो उन की इस्लाह़ के भी अस्बाब हुए और बि फ़ज़्लिही तआ़ला वोह

जिस्मानी बीमारियों से भी सिह्हत याब हुए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की नाक की बढ़ी हुई हड्डी भी दुरुस्त हुई और दिल के मोहलिक मरज़ से भी उन्हें नजात मिली। ज़िम्नन सवाब कमाने की निय्यत से दिल के इलाज का एक **मदनी नुस्ख़ा** हाज़िरे ख़िदमत करता हूं। चुनान्चे

**अ़ज्वा खजूर की गुठली से दिल का इलाज :** **एक** मक़ामी अख़्बार के "कॉलम" में दिये हुए एक वाक़िए को **बित्तसर्रुफ़** अ़र्ज़ करता हूं : 84 सालह एक बहुत बड़े साबिक़ फ़ौजी अफ़्सर का बयान है कि 56 साल की उ़म्र में मुझे दिल का आ़रिज़ा लाहिक़ हुवा, मैं अपने मरज़ को ख़ुफ़्या रखना चाहता था क्यूं कि इस के इज़्हार से मेरे फ़ौजी केरियर पर ज़द पड़ सकती थी चुनान्चे मैं डॉक्टरी इलाज से कतरा रहा था। ऐसे में मुझे किसी साहिब ने बताया कि मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की मश्हूर खजूर "अ़ज्वा" की गुठलियां बारीक पीस कर उस का पाउडर (या'नी सुफूफ़) रोज़ाना सुब्ह आधी चम्मच पानी के साथ निगल लीजिये। मैं ने उस मदनी नुस्ख़े पर अ़मल किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हैरत अंगेज़ तौर पर मेरी सिह्हत में बेहतरी आ गई। येह नुस्ख़ा वोह आज भी इस्ति'माल कर रहे हैं और शायद इसी की बरकत से 84 साल की उ़म्र में भी वोह न सिर्फ़ सिह्हत मन्द और रोज़ मर्रा के कामों में **मुतहर्रिक** (ACTIVE) हैं बल्कि उन का दिल भी जवानों की तरह मज़्बूत है। उसी अख़्बारी कॉलम में येह भी है कि 1995 सि. ई. की एक मश्हूर तरीन शख़्सिय्यत को डॉक्टरों ने बताया कि आप के दिल की तीन नालियां बन्द हो चुकी हैं। इस पर उन्हों ने **एन्जियो प्लास्टी** (Angioplasty) करवाने के लिये लन्दन जाने का फ़ैसला किया। मैं ने (या'नी मज़्कूरा साबिक़ फ़ौजी अफ़्सर ने) उन्हें भी येह **मदनी नुस्ख़ा** बताया और मश्वरा दिया कि आप 30 दिन तक येह इलाज कर लीजिये, अगर फ़ाएदा न हो तो बेशक **एन्जियो प्लास्टी** करवा लीजिये। चुनान्चे उन्हों ने येह **मदनी नुस्ख़ा** लिया और इस का इस्ति'माल शुरूअ़ कर दिया, एक महीने के बा'द येह लन्दन गए, वहां उन्हों ने दुन्या के एक नामवर कॉर्डियो लोजिस्ट (या'नी माहिरे अमराज़े क़ल्ब) से राबिता किया, उस ने उन के टेस्ट कराए और टेस्टों के नताइज देख कर उन्हें बताया आप का दिल मुकम्मल तौर पर ठीक है, आप को किसी क़िस्म के इलाज की ज़रूरत नहीं। उन्हों ने अपने पुराने टेस्ट की रिपोर्ट्स

उस के सामने रख दीं, उस ने दोनों टेस्ट मेच किये और येह मानने से इन्कार कर दिया कि येह दोनों टेस्ट एक ही शख़्स के हैं। क़िस्सा मुख़्तसर वोह वापस आए और उन्हों ने इस **मदनी नुस्ख़े** को अपना मा'मूल बना लिया। 2009 सि. ई. में उन्हों ने दोबारा टेस्ट करवाए, पुराने टेस्ट की रिपोर्ट्स मिला कर देखी और इस के बा'द येह बता कर हैरान कर दिया कि 1995 सि. ई. से ले कर 2009 सि. ई. तक उन के दिल में किसी क़िस्म का कोई फ़र्क़ नहीं आया, उन का दिल मुकम्मल तौर पर सिह्हत मन्द है। वोह येह **मदनी नुस्ख़ा** आज भी इस्ति'माल कर रहे हैं और अपने बे शुमार दोस्तों को भी करवा रहे हैं।

*न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से*
*उठा ले जाए थोड़ी ख़ाक उन के आस्ताने से*

(ज़ौक़े ना'त)

**मदनी इन्आ़मात : दा'वते इस्लामी** ने इस पुर फ़ितन दौर में "नेक बनने का नुस्ख़ा" बनाम **"मदनी इन्आ़मात"** ब सूरते सुवालात इनायत फ़रमाया है। इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63** और त़लबए इ़ल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83** और मदनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये **40** और ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 मदनी इन्आ़मात** हैं। बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़लबा वग़ैरा मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल (या किसी भी मुनासिब वक़्त पर) **"फ़िक्रे मदीना"** या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर मदनी इन्आ़मात के "जेबी साइज़ रिसाले" में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। **इन** मदनी इन्आ़मात को अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से दूर होती चली जाती हैं और इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनता है। बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से मदनी इन्आ़मात का रिसाला ह़ासिल कीजिये और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपना मुह़ासबा) करते हुए उस में दिये गए ख़ाने पुर कीजिये और हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ हर मदनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अपने यहां के मदनी इन्आमात के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

**आ़मिलीने मदनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **मदनी बहार** से लगाइये, चुनान्चे हैदरआबाद के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़सम खा कर) बयान है कि माहे रजबुल मुरज्जब 1426 सि. हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से मदनी इन्आ़मात से मुतअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।**

*मदनी इन्आ़मात की भी मरह़बा क्या बात है*
*क़ुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वासित़े सौग़ात है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## अवरादो वज़ाइफ़ का मा'मूल बना लीजिये

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **रियाकारी** से बचने के लिये बयान कर्दा मुआ़लजात के साथ साथ ह़स्बे तौफ़ीक़ अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ येह 8 **रूह़ानी इलाज** भी कीजिये, जिन से रियाकारी के वस्वसे दूर होंगे।

﴿1﴾ रोज़ाना येह दुआ़ तीन बार पढ़ लीजिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ छोटी बड़ी हर त़रह़ की **रिया** दूर रखेगा। दुआ़ येह है : (1)''اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ وَاَنَا اَعْلَمُ وَ اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ''

﴿2﴾ जब भी दिल में **रियाकारी** का ख़याल आए तो ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ'' एक बार पढ़ने के बा'द उलटे कन्धे की त़रफ़ तीन बार थू थू कर दीजिये।

﴿3﴾ रोज़ाना दस बार ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ'' पढ़ने वाले पर शैत़ान से ह़िफ़ाज़त

1. ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं जान बूझ कर तेरा शरीक ठहराने से तेरी पनाह चाहता हूं और ला इ़ल्मी में ऐसा अ़मल करने पर तुझ से मग़्फ़िरत का सुवाल करता हूं।

करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर देता है।

﴾4﴿ सूरतुल इख़्लास ग्यारह बार सुब्ह़ (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमक्ने तक सुब्ह़ है) पढ़ने वाले पर अगर शैत़ान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए तो न करा सके जब तक कि येह (पढ़ने वाला) ख़ुद न करे। (अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 21)

﴾5﴿ सूरतुन्नास पढ़ लेने से भी वस्वसे दूर होते हैं।

﴾6﴿ **मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "**सूफ़ियाए किराम** رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि जो कोई सुब्ह़ शाम इक्कीस इक्कीस बार "**लाह़ौल शरीफ़**" पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **वस्वसए शैत़ानी** से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 87)

﴾7﴿ هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ (پ۲۷ الحدید۳) कहने से फ़ौरन **वस्वसा** दूर हो जाता है।

﴾8﴿ سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْخَلَّاقِ، ﴿اِنْ یَّشَاْ یُذْهِبْكُمْ وَ یَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِیْدٍ ۙ وَّ مَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِیْزٍ﴾ (پ۱۳ ابراهیم آیت۱۹،۲۰) की कसरत इसे या'नी वस्वसे को जड़ से क़त्अ़ कर (या'नी काट) देती है। (मुलख़्ख़स़ अज़ फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 770) (इस दुआ़ के ह़िस्सए आयत को आप की मा'लूमात के लिये **मुनक़्क़श** हिलालैन और रस्मुल ख़त़ की तब्दीली के ज़रीए वाज़ेह़ किया है)

*रियाकारी से हर दम तू बचाना*
*ख़ुदाया बन्दए मुख़्लिस बनाना*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**इलाज के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हो तो ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अगर भरपूर इलाज के बा'द भी **इफ़ाक़ा** न हो तो घबराइये नहीं बल्कि इलाज जारी रखिये कि "**दिल को भी आराम हो ही जाएगा।**" क्यूं कि अगर हम ने इलाज तर्क कर दिया तो गोया ख़ुद को मुकम्मल त़ौर पर शैत़ान के ह़वाले कर दिया कि इस त़रह़ तो वोह हमें कहीं का न छोड़ेगा। लिहाज़ा हमें चाहिये कि **रियाकारी** से जान छुड़ाने की कोशिश जारी रखें।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **मिन्हाजुल आ़बिदीन** में **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने जो कुछ फ़रमाया उस का ख़ुलासा है : अगर आप येह मह़सूस करें कि शैत़ान, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगने के बा वुजूद पीछा नहीं छोड़ रहा और ग़ालिब आने की कोशिश में है तो इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को आप के मुजाहदे, **कुव्वत** और सब्र का इम्तिह़ान मत़्लूब है, या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज़्मा रहा है कि आप शैत़ान से मुक़ाबला और मुह़ारबा (या'नी जंग) करते हैं या उस से मग़्लूब हो (या'नी हार) जाते हैं । **( مِنهاجُ العابِدين (عربی) ص٤٦ )**

*रियाकारियों से बचा या इलाही*
*सियहकारियों से बचा या इलाही*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**इबादत की ता'रीफ़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अभी रियाकारी का बयान किया गया और येह भी मा'लूम हुवा कि रियाकारी **इबादत** में की जाती है लिहाज़ा **इबादत की ता'रीफ़** भी अ़र्ज़ करता हूं, फिर मज़ीद **नेकी की दा'वत** पेश करते हुए اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इबादत की अक़्साम और कुछ **निय्यत** के मुतअ़ल्लिक़ भी अ़र्ज़ करने की निय्यत है । **इबादत की ता'रीफ़** बयान करते हुए **उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं :** किसी को इबादत के लाइक़ समझते हुए उस की किसी क़िस्म की ता'ज़ीम करना ''इबादत'' है और अगर इबादत के लाइक़ न समझें तो वोह मह़्ज़ (या'नी सिर्फ़) **ता'ज़ीम** होगी इबादत नहीं

कहलाएगी, जैसे नमाज़ में हाथ बांध कर खड़ा होना इबादत है लेकिन हाथ बांधने का येही अ़मल बारगाहे रिसालत में सुनहरी जालियों के रू बरू हो, या सलातो सलाम पढ़ने में हो, किसी बुज़ुर्ग की तशरीफ़ आवरी के मौक़अ़ पर हो, **तबर्रुकात** की ज़ियारत करते हुए हो, किसी **वलिय्युल्लाह** के मज़ार शरीफ़ के सामने हो, अपने पीर साह़िब, उस्ताद या मां बाप वग़ैरा के लिये हो तो येह इबादत नहीं फ़क़त़ **ता'ज़ीम** है।

**रिज़ाए रब्बुल अनाम वाला हर काम इबादत है :** **इबादत** का मफ़्हूम बहुत वसीअ़ है और येह रिज़ाए रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के लिये किये जाने वाले हर काम को मुह़ीत़ (या'नी घेरे हुए) है, जैसा कि फ़तावा रज़विय्या जिल्द 29 में **ग़म्ज़ुल उ़यून** और **रद्दुल मुह़तार** के ह़वाले से लिखा है : "इबादत वोह है कि जिस के करने पर सवाब दिया जाता है और वोह सवाब की निय्यत पर मौक़ूफ़ होती है।" **ताजुल अ़रूस** में नक़्ल किया : "इबादत वोह फ़े'ल है जिस के करने पर रब राज़ी होता है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 647, 648) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की तह़रीर का ख़ुलासा है : जो भी काम रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने के लिये किया जाए **इबादत** है।

(मुलख़्ख़स अज़ तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 77)

**क़बूलिय्यते अ़मल की शराइत़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** याद रखिये ! अ़मल की क़बूलिय्यत के लिये सवाबे आख़िरत की **निय्यत** ना गुज़ीर (या'नी ज़रूरी) है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्ह़ा 529 पर पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** की उन्नीसवीं आयते करीमा में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىِٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿۱۹﴾

**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।

**इस** आयते करीमा के तह्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : अ़मल की क़बूलिय्यत के लिये तीन चीज़ें दरकार हैं : (1) **त़ालिबे आख़िरत** होना या'नी **निय्यत नेक** (अच्छी निय्यत हो) (2) **सअ़्य** (कोशिश) या'नी अ़मल को ब एहतिमाम उस के हुक़ूक़ के साथ अदा करना (3) **ईमान** जो सब से ज़ियादा ज़रूरी है । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 554)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बुरी निय्यतों से नजात और **अच्छी अच्छी निय्यतों** की आ़दात नसीब होंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**हर अ़मल का दारो मदार निय्यत पर है :** **क़ुरआने** करीम के बा'द सब से ज़ियादा मो'तबर किताब **बुख़ारी** शरीफ़ है, इस की सब से पहली ह़दीसे पाक है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ या'नी आ'माल का दारो मदार **निय्यतों** पर है । (بخاری ج۱ ص۶ حدیث۱) इस ह़दीसे पाक के बारे में शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : इस ह़दीस का येह मत़लब हुवा कि आ'माल का सवाब निय्यत ही पर है, बिग़ैर निय्यत किसी सवाब का इस्तिह़्क़ाक़ (या'नी ह़क़दार) नहीं । (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 172)

## अच्छी निय्यतों के मुतअ़ल्लिक़ 2 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 853 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" सफ़्ह़ा 173 ता 174 से अच्छी निय्यतों के फ़ज़ाइल पर दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है । (اَلْجَامِعُ الصَّغِیر ص۸۱ حدیث ۱۲۸۴) ﴾2﴿ अच्छी

निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल करेगी । (اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص۵۵۷ حديث ۹۳۲۶)

**निय्यत किसे कहते हैं :** **निय्यत,** दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं ख़्वाह वोह किसी चीज़ का हो । और शरीअ़त में (निय्यत) इ़बादत के इरादे को कहते हैं ।

(नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 169)

**मुबाह़ काम अच्छी निय्यत से इ़बादत हो जाता है :** **बहुत** सारे काम **मुबाह़** हैं, मुबाह़ उस जाइज़ अ़मल या फ़े'ल (या'नी काम) को बोलते हैं जिस का करना न करना यक्सां हो या'नी ऐसा काम करने से न सवाब मिले न गुनाह । मसलन खाना पीना, सोना, टहलना, दौलत इकठ्ठी करना, तोह़फ़ा देना, उ़म्दा या ज़ाइद लिबास पहनना वग़ैरा काम मुबाह़ हैं । अगर थोड़ी सी तवज्जोह दी जाए तो मुबाह़ काम को **इ़बादत** बना कर उस पर सवाब कमाया जा सकता है, इस का त़रीक़ा बयान करते हुए **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हर मुबाह़ (या'नी ऐसा जाइज़ अ़मल जिस का करना न करना यक्सां हो) निय्यते ह़सन (या'नी अच्छी निय्यत) से **मुस्तह़ब** हो जाता है । (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 452)
फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام फ़रमाते हैं : मुबाह़ात (या'नी ऐसे जाइज़ काम जिन पर न सवाब हो न गुनाह उन) का हुक्म अलग अलग निय्यतों के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हो जाता है, इस लिये जब इस से (या'नी किसी मुबाह़ से) त़ाआ़त (या'नी इ़बादात) पर **क़ुव्वत** ह़ासिल करना या त़ाआ़त (या'नी इ़बादात) तक पहुंचना मक़्सूद हो तो येह (मुबाह़ात या'नी जाइज़ चीज़ें भी) इ़बादात होंगी मसलन खाना पीना, सोना ह़ुसूले माल और वत़ी[1] करना ।

(اَيضاً ج۷، ص۱۸۹، رَدُّالْمُحتار ج۴ ص۷۵)

**मुबाह़ काम में अच्छी निय्यतें न करने वाले नुक़्सान में हैं :** **अगर** कोई मुबाह़ काम बुरी निय्यत से किया जाए तो **बुरा** हो जाएगा और अच्छी निय्यत से किया जाए तो **अच्छा** और कुछ भी निय्यत न हो तो मुबाह़ रहेगा और क़ियामत के ह़िसाब की दुश्वारी दरपेश होगी । लिहाज़ा अ़क़्ल मन्द वोही है कि हर मुबाह़ काम में कम अज़ कम एक आध

1 : या'नी मियां बीवी का "मिलाप"

अच्छी **निय्यत** कर ही लिया करे, हो सके तो ज़ियादा निय्यतें करे कि जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब ज़ियादा मिलेगा। **निय्यत** का येह भी फ़ाएदा है कि निय्यत करने के बा'द अगर वोह काम किसी वजह से न कर सका तब भी निय्यत का सवाब मिल जाएगा जैसा कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। **(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)**

**निय्यत न करने के नुक़्सान और करने के फ़ाएदे की रिवायत :** **मुह़क़्क़िक़ अ़लल इ़त्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन,** ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं रिवायत में आया है, जब फ़िरिश्ते बन्दों के आ'माल नामों को आस्मानों पर ले कर जाते और दरबारे इलाही में पेश करते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : **اَلْقِ تِلْكَ الصَّحِيْفَةَ اَلْقِ تِلْكَ الصَّحِيْفَةَ** या'नी "इस नामए आ'माल को फेंक दो, इस नामए आ'माल को फेंक दो।" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : **या अल्लाह !** तेरे इस बन्दे ने जो नेक आ'माल किये हैं उन को हम ने देख कर और सुन कर लिखा है। **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है कि **لَمْ يُرِدْ وَجْهِى** या'नी "इस बन्दे ने इन आ'माल में मेरी रिज़ा की निय्यत नहीं की थी," इस लिये येह मेरे दरबार में मक़्बूल नहीं। फिर एक दूसरे फ़िरिश्ते को **अल्लाह** तआ़ला येह हुक्म फ़रमाता है कि **اُكْتُبْ لِفُلَانٍ كَذَا وَكَذَا** या'नी "फ़ुलां बन्दे के नामए आ'माल में फ़ुलां फ़ुलां अ़मल लिख दे।" फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : "**या अल्लाह !** येह अ़मल तो इस बन्दे ने नहीं किया !" **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : गो इस ने येह अ़मल नहीं किया मगर **इस की निय्यत तो इस अ़मल के करने की थी इस लिये मैं इस की निय्यत पर इस को इस अ़मल का अज्र दूंगा।** **(حِلْيَةُ الْاَولياء ج٢ص٣٥٦ رقم ٢٠٤٨ وغيره)** ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़दीसे मुबारका में येह भी आया है , **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** या'नी "मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" **(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج٦ ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)** ज़ाहिर है कि नेक अ़मल पर तो सवाब उसी वक़्त मिलेगा जब कि **निय्यत** अच्छी हो और अगर **निय्यत** बुरी हो तो नेक अ़मल पर कोई सवाब ही नहीं, मगर अच्छी **निय्यत** पर तो बहर ह़ाल सवाब मिलेगा ख़्वाह अ़मल करे या न करे। इस लिये कि मोमिन की **निय्यत** उस के अ़मल से बेहतर है। इसी लिये बा'ज़ बुज़ुर्गाने

दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने फ़रमाया है

ہر کرا اندر عمل اِخلاص نیست
در جہاں از بندگانِ خاص نیست

या'नी जिस के अ़मल में इख़्लास नहीं वोह दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दों में से नहीं है

ہر کرا کار از برائے حق بُوَد
کارِ اُو پیوستہ بارَونق بُوَد

या'नी जिस का अ़मल रिज़ाए रब्बे लम यज़ल के लिये होता है हमेशा उस का अ़मल बा रौनक़ रहा करता है। (اشعۃُ اللمعات ج ۱ ص ۳۹)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अच्छी निय्यत अच्छा और बुरी निय्यत बुरा फल लाती है। बल्कि बसा अवक़ात **बुरी निय्यत** का बुरा फल हाथों हाथ ज़ाहिर हो जाता है। इस ज़िम्न में **दो ह़िकायात** पेशे ख़िदमत हैं चुनान्चे

**(1) अनोखी गाय : ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : एक बादशाह एक बार अपनी सल्त़नत के दौरे पर निकला। इस दौरान एक शख़्स के पास उस का क़ियाम हुवा, (मेज़बान बादशाह को जानता न था) मेज़बान ने शाम को अपनी गाय को दोहा तो बादशाह येह देख कर ह़ैरान रह गया कि उस से 30 गायों के बराबर दूध निकला! उस ने दिल ही दिल में वोह **अनोखी गाय** छीन लेने की **बुरी निय्यत** कर ली। दूसरे रोज़ शाम को उस गाय से आधा दूध निकला, बादशाह ने जब **तअ़ज्जुब** का इज़्हार किया तो मेज़बान कहने लगा : "बादशाह ने अपनी रिआ़या के साथ ज़ुल्म की **निय्यत** की है जिस की नुहू़सत से आज दूध आधा हो गया है कि जब बादशाह ज़ालिम हो तो बरकत ख़त्म हो जाती है" येह ह़ैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ सुन कर बादशाह ने **अनोखी गाय** ज़ुल्मन छीन लेने की **निय्यत** ख़त्म कर दी। चुनान्चे दूसरे दिन गाय ने फिर उतना ही दूध दिया जितना पहले दिया था। इस वाक़िए से बादशाह को बहुत इ़ब्रत ह़ासिल हुई और उस ने अपनी रिआ़या पर ज़ुल्म करना बन्द कर दिया। (مُلَخَّص از شُعَبُ الْاِیمان ج ٦ ص ٥٣ رقم ٧٤٧٥)

**《2》 गन्ने का ठन्डा मीठा रस : ईरान** के बादशाहों का लक़ब पहले "किस्रा" हुवा करता था जिस त़रह़ मिस्र के तमाम बादशाह "फ़िरऔ़न" कहलाते थे। एक बार एक बादशाहे किस्रा अपने लश्कर से बिछड़ कर किसी बाग़ के दरवाज़े पर जा पहुंचा, उस ने पीने के लिये पानी मांगा तो एक बच्ची **गन्ने का ठन्डा मीठा रस** ले आई। बादशाह ने पिया तो बहुत लज़ीज़ था, उस ने बच्ची से इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) : कैसे बनाती हो ? उस ने बताया कि इस बाग़ में बहुत आ'ला क़िस्म के गन्नों की पैदावार होती है, हम अपने हाथों से गन्ने निचोड़ कर रस निकाल लेते हैं ! बादशाह ने एक और गिलास की फ़रमाइश की, वोह लेने गई, इस दौरान बादशाह की **निय्यत ख़राब** हो गई और उस ने तै कर लिया कि मैं येह बाग़ ज़बर दस्ती ले कर दूसरा बाग़ इन को दे दूंगा। इतने में वोह बच्ची रोती हुई आई और कहने लगी : हमारे बादशाह की **निय्यत** ख़राब हो गई है। बादशाह बोला : तुम्हें इस का कैसे इ़ल्म हुवा ? कहने लगी : "पहले ब आसानी रस **निचुड़** जाता था लेकिन अब की बार ख़ूब ज़ोर लगाने के बा वुजूद भी मैं रस न निकाल सकी।" बादशाह ने फ़ौरन बाग़ छीनने की बुरी **निय्यत** तर्क कर दी और कहा : एक बार फिर जाओ और कोशिश करो। चुनान्चे वोह गई और ब आसानी रस निकाल कर लाने में काम्याब हो गई।

(حياة الحيوان الكبرىٰ ج ١ ص ٢١٦، المنتظم فی تاريخ الملوك والامم لابن الجوزی ج ١٦ ص ٣١٠)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब भी किसी सुन्नत वग़ैरा पर अ़मल करने का मौक़अ़ हो तो उस वक़्त दिल में निय्यत ह़ाज़िर होनी ज़रूरी है। मसलन कपड़े पहनते वक़्त पहले सीधी आस्तीन में हाथ डाला, या उतारते वक़्त उलटी आस्तीन से पहल की, इसी त़रह़ जूते पहनने उतारने में ह़स्बे आ़दत येही तरकीब बनी येह सब सुन्नतें हैं मगर अ़मल करते वक़्त **सुन्नत** पर अ़मल की बिल्कुल ही **निय्यत** दिल में नहीं थी तो येह अ़मल "इ़बादत" नहीं, "आ़दत" कहलाएगा सुन्नत का सवाब नहीं मिलेगा।

**निय्यत के मुतअ़ल्लिक़ एक मा'लूमाती फ़तवा : दा'वते इस्लामी** के मा तह़्त चलने वाले "दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत" का **निय्यत** के मुतअ़ल्लिक़ एक मा'लूमाती

**फ़तवा** मुलाहज़ा फ़रमाइये : बेशक बिग़ैर **निय्यत** के किसी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता बल्कि इस त़रह़ येह (बिला निय्यत की जाने वाली) **इबादतें** "आ़दतें" बन जाती हैं। किसी **अ़मले ख़ैर में निय्यत** का मत़लब येह है कि जो अ़मल किया जा रहा है दिल उस की त़रफ़ **मुतवज्जेह** हो और वोह अ़मल **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये किया जा रहा हो, इस निय्यत से इबादत और आ़दत में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है। इस से पता चला कि **दिल का मुतवज्जेह होना और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा पेशे नज़र होना ही निय्यत है** और इसी से इबादत और आ़दत में फ़र्क़ होता है लिहाज़ा अगर इबादत में **निय्यत** कर ली जाए तो सवाब मिलता है और अगर **निय्यत** न की जाए तो अ़मल आ़दत बन जाता है और इस पर सवाब भी नहीं मिलता जैसा कि ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : اَلنِّيَّةُ لُغَةً:اَلْقَصْدُ وَشَرْعاً تَوَجُّهُ الْقَلْبِ نَحْوَالْفِعْلِ ابْتِغَاءً لِّوَجْهِ اللّٰهِ وَالْقَصْدُ بِهَا تَمْيِيْزُالْعِبَادَةِ عَنِ الْعَادَةِ या'नी निय्यत के **लुग़वी मा'ना** हैं : "क़स्द व इरादा" और **शरई मा'ना** हैं : जो अ़मल करने लगे हैं, दिल को उस की त़रफ़ **मुतवज्जेह** करना और वोह अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया जा रहा हो और निय्यत से "इबादत" और "आ़दत" में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है। (مرقاۃ المفاتیح ج ۱ ص ۹٤) लेकिन इस के साथ येह याद रहे कि बहुत से आ'माल ऐसे हैं कि जिन में हम मह़सूस करते हैं कि येह मह़्ज़ आ़दत के त़ौर पर कर रहे हैं ह़ालां कि इस में भी "इबादत की निय्यत" मौजूद होती है और इस का एह़सास इस लिये कम होता है कि इब्तिदाअन या बत़ौरे ख़ास जिस क़दर तवज्जोह दी जाती है वोह बारहा अ़मल करने की वजह से बर क़रार नहीं रहती। हां अगर अस्लन (या'नी बिल्कुल) ही निय्यत कुछ न हो तो उस पर वाक़ेई कोई सवाब नहीं। وَاللّٰهُ تَعَالٰى وَرَسُوْلُهٗ اَعلَم صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

**अच्छी निय्यतों की तौफ़ीक़ किसे मिलती है :** **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : हर **मुबाह़** काम (या'नी जाइज़ काम जिस के करने में न सवाब हो न गुनाह) एक या ज़ियादा **निय्यतों** का एह़तिमाल (या'नी इम्कान) रखता है जिस के ज़रीए वोह मुबाह़ काम

उ़म्दा **इ़बादात** में से हो जाता है और उस के ज़रीए़ बुलन्द दरजात ह़ासिल होते हैं । वोह इन्सान कितने बड़े नुक़्सान में है जो मुबाह़ कामों को **अच्छी निय्यतों** के ज़रीए़ सवाब वाले काम बनाने के बजाए जानवरों की त़रह़ ग़फ़्लत से बजा लाता और खु़द को सवाबों से मह़रूम रखता है । बन्दे के लिये मुनासिब नहीं कि किसी ख़त़रे (या'नी ज़ेह्न में आने वाले ख़याल) लह़्ज़े (या'नी लम्ह़े) और उठाए जाने वाले क़दम को ह़क़ीर या'नी ग़ैर अहम जाने, क्यूं कि इन तमाम कामों के बारे में क़ियामत के दिन सुवाल होगा कि क्यूं किया था ? और इस से मक़्सूद क्या था ? येह बात (या'नी मुबाह़ का अच्छी निय्यत के ज़रीए़ इ़बादत बन जाना) सिर्फ़ उन मुबाह़ उमूर के बारे में है जिन में कराहत न हो । इसी लिये नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : حَلالُهَا حِسَابٌ وَّحَرَامُهَا عَذَابٌ ۔ या'नी इस के ह़लाल में ह़िसाब है और ह़राम में अ़ज़ाब । (اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۵ ص۲۸۳ حديث ۸۱۹۲) मज़ीद फ़रमाते हैं : जिस के दिल में आख़िरत की भलाइयां इकठ्ठी करने का जज़्बा होता है उस के लिये इस त़रह़ की **निय्यतें** करना आसान होता है अलबत्ता जिस के दिल में दुन्यवी ने'मतों का ग़लबा हो उस के दिल में इस त़रह़ की **निय्यतें** नहीं आतीं बल्कि कोई याद दिलाए तब भी उस के अन्दर इस क़िस्म की निय्यतों का जज़्बा पैदा नहीं होता और अगर निय्यत हो भी तो मह़ज़ एक ख़याल सा होता है ह़क़ीक़ी निय्यत से इस का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता !

(اِحیاءُ الْعُلوم ج ۵ ص ۹۸)

**वोशरूम जाने में भी निय्यतें करनी चाहिएं :** **बैतुल ख़ला** जाने में भी निय्यतें करनी चाहिएं एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं हर काम में निय्यत पसन्द करता हूं ह़त्ता कि खाने, पीने, सोने और बैतुल ख़ला (या'नी लेट्रीन) में दाख़िल होने के लिये भी ।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج ۵ ص۹۸)

**एक** साह़िब छत पर बाल बना रहे थे, उन्हों ने अपनी बीवी को आवाज़ दी कि मेरी **कंघी** लाना । औ़रत ने पूछा : क्या **आईना** भी लेती आऊं ? वोह थोड़ी देर ख़ामोश रहे । फिर फ़रमाया : हां । किसी सुनने वाले ने जवाब फ़ौरन न देने की वजह दरयाफ़्त की तो

फ़रमाया : मैं ने **एक निय्यत** के साथ अपनी ज़ौजा को **कंघी** लाने के लिये कहा था, जब उन्हों ने **आईना** लाने का पूछा तो उस वक़्त आईने के सिल्सिले में मेरी कोई **निय्यत** न थी लिहाज़ा मैं ने निय्यत बनाने के लिये ग़ौरो फ़िक्र किया, ह़त्ता कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे **निय्यत** इनायत फ़रमाई इस पर मैं ने कह दिया : हां । वोह भी ले आइये ।

(قُوتُ القُلُوب ج ۲ ص ۲۷٤)

**पहले के मुसल्मान बा क़ाइदा इल्मे निय्यत सीखते थे :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی ने फ़रमाया : "जैसे सलफ़ (या'नी पहले के मुसल्मान) इ़ल्म ह़ासिल करते थे इसी त़रह़ अ़मल के लिये **इ़ल्मे निय्यत** भी सीखते थे ।" (ایضاً ص۲٦٨) ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी رَحمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ख़ुलूसे निय्यत के साथ दो रक्अ़तें पढ़ना तेरे लिये सत्तर अह़ादीस लिखने से बेहतर है ।" या येह फ़रमाया कि "सात सो अह़ादीस लिखने से बेहतर है ।" (ایضاً ص۲۷٦) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "कई छोटे अ़मल ऐसे हैं जिन को **निय्यत** बड़ा अ़मल बना देती है ।"

(ایضاً ص۲۷۵)

**ग़ार का आ़बिद :** **लोगों** को दिखाने और वाह वाह करवाने की निय्यत से किये जाने वाले पहाड़ जितने बड़े बड़े आ'माल भी ना मक़्बूल होते हैं चुनान्चे मन्क़ूल है : बनी इस्राईल के एक आ़बिद (या'नी इ़बादत करने वाले) ने एक ग़ार में चालीस बरस तक **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत की । फ़िरिश्ते उस के आ'माल ले कर आस्मानों पर जाते और वोह क़बूल न किये जाते । फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : "ऐ हमारे परवर दगार तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! हम ने तेरी त़रफ़ सह़ीह़ (आ'माल) उठाए हैं ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! तुम ने सच कहा, मगर (इ़बादत में उस की **निय्यत** बुरी होती है) वोह चाहता है कि इस का मक़ाम (सब को) मा'लूम हो जाए (या'नी रिया व शोहरत का त़लब गार है)

(ایضاً ص۲٦٤)

ٱلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ ٱلۡعٰلَمِيۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

## फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه :

**(1)** रंग बातों से कम और सोह्‌बत से ज़ियादा चढ़ता है ।

(मदनी मुज़ाकरा, 25 जुल हिज्जतिल ह़राम)

**(2)** ख़ौफ़े ख़ुदा के ह़ुसूल के लिये ख़ाइफ़ीन की सोह्‌बत बहुत ज़रूरी है ।

(मदनी मुज़ाकरा, (बा'दे इ़शा) 20 रमज़ानुल मुबारक 1436 हि.)

**(3)** बुरी सोह्‌बत, ईमान के लिये ज़हरे क़ातिल है ।

(मदनी मुज़ाकरा, (बा'दे इ़शा) 25 रमज़ानुल मुबारक 1436 हि.)

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

*Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai* 9022177997, 9320558372

*Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad* 9327168200

*421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi*

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025*T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net